

न्यायालय अति. संभागीय आयुक्त, उदयपुर
पीठासीन अधिकारी: सी. आर. देवासी, आर.ए.एस.

प्रकरण संख्या – 84 / 2024 अपील (GCMS 2024/30)

पंजीयन दिनांक– 21 / 02 / 2024

निर्णय दिनांक– 19 / 03 / 2025

1. श्रीमती लीला देवी पुत्री स्व. लालु पत्नि मांगीलाल गाडरी, निवासी नेगड़िया, तहसील देलवाडा, जिला राजसमंद ।

—अपीलांट

बनाम

1. श्रीमती केसीबाई पत्नि केलाजी गाडरी, निवासी खेमपुरा, तहसील गिर्वा, जिला उदयपुर ।
2. सरपंच/सचिव, ग्राम पंचायत नेगड़िया, तहसील देलवाडा, जिला राजसमंद ।
3. श्री योगेश पिता रूपलाल गाडरी, निवासी आदर्श नगर, खेमपुरा, तहसील गिर्वा, जिला उदयपुर ।
4. श्रीमती कैलाश पत्नि कन्हैयालाल गाडरी, निवासी अम्बामाता स्कीम उदयपुर, तहसील गिर्वा, जिला उदयपुर ।
5. श्रीमती सीमा पिता रूपलाल गाडरी, निवासी आदर्श नगर, खेमपुरा, तहसील गिर्वा, जिला उदयपुर ।
6. श्रीमती लीला पिता रूपलाल गाडरी, निवासी लोडावन थामला, तहसील मावली, जिला उदयपुर ।

—रेस्पोंडेंट्स

उपस्थिति:—

1. श्री भुरालाल डांगी अधिवक्ता अपीलांट
2. श्री खेमराज डांगी अधिवक्ता रेस्पोंडेंट संख्या 1, 3 से 6

अपील अन्तर्गत धारा-76 राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956
सहायक कलक्टर (उपखण्ड अधिकारी) नाथद्वारा, जिला राजसमंद के
प्रकरण संख्या 2023 / 231 निर्णय दिनांक 02.01.2024 अपील विरुद्ध
नामांतरण संख्या 523 दिनांक 31.07.1990 ग्रा. प. नेगड़िया

निर्णय

दिनांक 19/03/2025

अपीलांट द्वारा यह अपील अंतर्गत धारा 76 राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 विरुद्ध निर्णय सहायक कलक्टर (उपखण्ड अधिकारी) नाथद्वारा, जिला राजसमंद के प्रकरण संख्या 2023/231 अपील विरुद्ध नामांतरण संख्या 523 दिनांक 31.07.1990 ग्राम पंचायत नेगडिया निर्णय दिनांक 02.01.2024 के विरुद्ध दिनांक 19.02.2024 को प्रार्थना पत्र बाबत स्थगन आदेश मय शपथ पत्र के साथ इस न्यायालय में पेश की गई।

इस प्रकरण में संक्षेप में तथ्य इस प्रकार है कि रेस्पोंडेंट संख्या 1 द्वारा अधीनस्थ न्यायालय सहायक कलक्टर (उपखण्ड अधिकारी) नाथद्वारा, जिला राजसमंद के यहां अपील अंतर्गत धारा 75 राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 के तहत नामांतरण संख्या 523 आदेश दिनांक 31.07.1990 के विरुद्ध प्रस्तुत कर निवेदन किया कि खातेदार नाथु पिता देवा नानगड, जाति गाडरी, निवासी नेगडिया तहसील देलवाडा, जिला राजसमंद के निवासी होकर उनकी कृषि भूमियां राजस्व ग्राम नेगडिया, पटवार हल्का नेगडिया, तहसील देलवाडा में स्थित है तथा खातेदार नाथु पिता देवा की मृत्यु हो चुकी है। रेस्पोंडेंट संख्या 1/अपीलांट केसी बाई खातेदार की जाईन्दा विधिक पुत्री है, परंतु ग्राम पंचायत नेगडिया ने बिना किसी जांच पडताल किये अपीलांट/रेस्पोंडेंट संख्या 1 पकिया के पिता लालु पिता नाथु गाडरी अर्थात् रेस्पोंडेंट संख्या 1/अपीलांट केसी बाई के भाई लालु अकेले के नाम राजस्व रेकॉर्ड में विरासत दर्ज कर दी, जबकि कानूनन रेस्पोंडेंट संख्या 1/अपीलांट केसी बाई भी नाथु पिता देवा की वारिस होकर उपरोक्त कृषि भूमियों में रेस्पोंडेंट संख्या 1/अपीलांट केसी बाई के हक अधिकार थे, परंतु अधीनस्थ न्यायालय ने नामांतरण संख्या 523 दिनांक 31.07.1990 स्वीकृत कर दिया, जिसे निरस्त किया जाकर नाथु पिता देवा के विधिक वारीसान के नाम नामांतरण दर्ज किया जावें। जिस पर अधीनस्थ न्यायालय

द्वारा अपने प्रकरण संख्या 2023/231 नामांतरण अपील निर्णय दिनांक 02.01.2024 से रैस्पोंडेंट संख्या 1 की अपील स्वीकार की जाकर ग्राम पंचायत नेगडिया के आदेश दिनांक 31.07.1990 नामांतरण संख्या 523 को निरस्त कर तहसीलदार, देलवाडा को प्रतिप्रेषित किये जाने से व्यथित/असंतुष्ट होकर अपीलांट द्वारा यह अपील पेश की गई है।

अधीनस्थ न्यायालय द्वारा निर्णय दिनांक 02.01.2024 से निम्नानुसार निर्णय पारित किया है:—**“अपील अपीलांट स्वीकार की जाती है। ग्राम पंचायत नेगडिया के आदेश दिनांक 31.07.1990 नामांतरण संख्या 523 को निरस्त किया जाकर तहसीलदार, देलवाडा को प्रतिप्रेषित कर निर्देशित किया जाता है कि नियमानुसार पुनः जांच कर नये सिरे से नामांतरकरण पारित करें। पत्रावली शुमार फ़ैसल होकर दाखित दफ़्तर हो।”**

यह अपील दर्ज रजिस्टर कर रैस्पोंडेंट्स को जरिये सम्मन सूचित किया गया तथा अधीनस्थ न्यायालय से अभिलेख मंगवाया गया। अपीलांट की ओर से अधिवक्ता श्री भुरालाल डांगी उपस्थित, रैस्पोंडेंट संख्या 1, 3 से 6 की ओर से अधिवक्ता श्री खेमराज डंगी उपस्थित तथा रैस्पोंडेंट संख्या 2 बावजूद सूचना के अनुपस्थित, उपस्थित अधिवक्ताओं की बहस दिनांक 12.03.2025 को सुनी गई।

अधिवक्ता अपीलांट ने अपनी बहस में अपील में वर्णित तथ्यों को दोहराते हुए बताया कि रैस्पोंडेंट केसी द्वारा अधीनस्थ न्यायालय में प्रस्तुत अपील पर श्रीमती पकिया पुत्री लालु के नाम से अपील के सूचना-पत्र जारी किये गये तथा जिस सम्मन के पुष्ट भाग पर पकिया के हस्ताक्षर पकिया का नाम लिखा है, तामील करायी गयी, जबकि स्व. लालु के पुत्री का नाम लीला पुत्री लालु पत्नि मांगीलाल है, जो इस अपील में अपीलांट है। अपीलांट का नाम कभी भी पकिया नहीं रहा है, अपीलांट का शुरू से ही नाम लीला होकर सभी सरकारी दस्तावेजों में लीला ही है, फिर भी रैस्पोंडेंट संख्या एक द्वारा जानबुझकर अपीलांट का नाम गलत लिखवाकर अपील प्रस्तुत की

गयी है। अपीलांट अनपढ़ हाकर अंगुठा लगाती है, ऐसी स्थिति में किसी फर्जी व्यक्ति द्वारा तामील करायी गयी है तथा ऐसे फर्जी हस्ताक्षर के आधार पर अधीनस्थ न्यायालय को गुमराह करने की गरज से मिथ्या कार्यवाही है, जो अपीलार्थी के मुकाबले शुन्य प्रभावी है। रेस्पोंडेंट संख्या 1 द्वारा ऐसे कोई ठोस दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किये हैं, फिर भी अधीनस्थ न्यायालय द्वारा बेरून मयाद अपील को स्वीकार कर प्रकरण को पुनः प्रेषित किया गया है, जो उचित नहीं है। अतः उक्तानुसार अधीनस्थ न्यायालय का निर्णय अपास्त किया जाकर अपील अपीलांट स्वीकार की जाने बाबत निवेदन किया गया।

अधिवक्ता रेस्पोंडेंट संख्या 1, 3 से 6 ने अपनी बहस में अपीलांट की बहस का खण्डन करते हुए अधीनस्थ न्यायालय सहायक कलक्टर (उपखण्ड अधिकारी) नाथद्वारा, जिला राजसमंद द्वारा दिनांक 02.01.2024 पारित निर्णय को उचित होना बताते हुए अपील अपीलांट खारिज किये जाने बाबत निवेदन किया गया।

प्रकरण में यह सुस्पष्ट है कि अधीनस्थ न्यायालय का निर्णय दिनांक 02.01.2024 की अपील अपीलांट द्वारा दिनांक 19.02.2024 को अंदर मयाद पेश की गयी है।

प्रकरण में रेस्पोंडेंट संख्या 1, 3 से 6 द्वारा प्रार्थना पत्र आदेश 41 नियम 27 जाप्ता दीवानी का प्रस्तुत किया। प्रार्थना पत्र के साथ प्रस्तुत दस्तावेज की प्रतियां राजकीय होने से प्रार्थना पत्र स्वीकार किया जाकर रेकार्ड पर रखे जाने की अनुज्ञा प्रदान की जाती है।

प्रकरण में उभयपक्षों की बहस सुनी गई। पत्रावली का आद्योपांत अवलोकन किया गया। अब हम प्रकरण में अपील में गुणावगुण पर निर्णय पारित करना उचित समझते हैं। रेस्पोंडेंट संख्या 1 द्वारा अधीनस्थ न्यायालय सहायक कलक्टर (उपखण्ड अधिकारी), नाथद्वारा, जिला राजसमंद के यहां अपील अंतर्गत धारा 75 राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 के तहत नामांतरण संख्या 523 आदेश दिनांक 31.07.1990 के विरुद्ध प्रस्तुत की थी, जिस पर अधीनस्थ

न्यायालय द्वारा अपने प्रकरण संख्या 2023/231 नामांतरण अपील निर्णय दिनांक 02.01.2024 से रेस्पोंडेंट संख्या 1 की अपील स्वीकार की जाकर ग्राम पंचायत नेगडिया के आदेश दिनांक 31.07.1990 नामांतरण संख्या 523 को निरस्त कर तहसीलदार, देलवाडा को प्रतिप्रेषित किये जाने से व्यथित/असंतुष्ट होकर अपीलांत द्वारा यह अपील पेश की गई है।

प्रकरण में यह सुस्पष्ट है कि मूल पुरुष श्री नाथु पिता देवा नानगड़, जाति गाडरी, निवासी नेगडिया, तहसील देलवाडा, जिला राजसमंद की मृत्यु के उपरांत उनके वारीसानों में एक पुत्र लालु पिता नाथु एवं दो पुत्रियां श्रीमती केंसी बाई पुत्री नाथु जी पत्नि केलाजी गाडरी एवं श्रीमती कस्तुरी बाई पुत्री नाथु जी पत्नि रूपलाल गाडरी होना जाहीर आया है, जिसमें से लालु पुत्र नाथु की मृत्यु होकर उनकी वारिस श्रीमती लीला (श्रीमती पकिया) पुत्री लालु पत्नि मांगीलाल गाडरी तथा श्रीमती कस्तुरी की मृत्यु होकर उनके वारिस श्री योगेश, श्रीमती कैलाश, श्रीमती सीमा एवं श्रीमती लीला पिता रूपलाल गाडरी होना प्रकट होता है।

इस प्रकरण में हिंदु उत्तराधिकार अधिनियम के धारा-8 व 10 के प्रावधानों का उल्लेख किया जाना उचित समझते हैं, जिसके अनुसार:-

Section 8 provides for the general rules of succession applicable to the devolution of the property of a male Hindu dying intestate.⁴⁴ The property devolves firstly, on the heirs specified in Class I of the Schedule; if there is no heir of Class I, then, on the heirs specified in Class II; if there is no heir in any of the two classes, on agnates and if there are no agnates, then upon the cognates of the deceased. Section 9 provides for the order of succession among the heirs in the Schedule. Section 10 provides for the distribution of property among heirs in Class I of the Schedule in the following terms:

“10. Distribution of property among heirs in class I of the Schedule.—

The property of an intestate shall be divided among the heirs in class I of the Schedule in accordance with the following rules:—

Rule 1.— The intestate’s widow, or if there are more widows than one, all the widows together, shall take one share.

Rule 2.— The surviving sons and daughters and the mother of the intestate shall each take one share.

Rule 3.— The heirs in the branch of each pre-deceased son or each pre-deceased daughter of the intestate shall take between them one share.

Rule 4.— The distribution of the share referred to in Rule 3—

(i) among the heirs in the branch of the pre-deceased son shall be so made that his widow (or widows together) and the surviving sons and daughters gets equal portions; and the branch of his predeceased sons gets the same portion;

(ii) among the heirs in the branch of the pre-deceased daughter shall be so made that the surviving sons and daughters get equal portions.”

In terms of Section 10, the division of property of an intestate among the heirs in Class - I is governed by the four Rules extracted above. They stipulate that

(i) the widow or if there is more than one all of them together shall take one share;

(ii) the surviving sons and daughters and mother shall each take one share; and

(iii) heirs in the branch of each pre-deceased son or each pre-deceased daughter take between them one share.

Class-I of the Schedule is in the following terms:

“Son; daughter; widow; mother; son of a pre-deceased son; daughter of a pre-deceased son; son of a predeceased daughter; daughter of a pre-deceased daughter; widow of a pre-deceased son; son of a predeceased son of a pre-deceased son; daughter

of a pre-deceased son of a pre-deceased son; widow of a predeceased son of a pre-deceased son; [son of a predeceased daughter of a pre-deceased daughter; daughter of a pre-deceased daughter of a pre-deceased daughter; daughter of a pre-deceased son of a pre-deceased daughter; daughter of a pre-deceased daughter of a predeceased son].”

उपयुक्त क्रम में हम माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निम्नांकित दृष्टांतों का उल्लेख किया जाना उचित समझते हैं जो हस्तगत प्रकरण में अपीलार्थी के पक्ष को साबित करते हैं:

**SUPREME COURT OF INDIA- Arunachala Gounder (Dead)
By Lrs. – Appellant Versus Ponnusamy And Ors. – Respondent,
Civil Appeal No. 6659 of 2011, Decided on : 20-01-2022**

(A) Hindu Succession Act, 1956 – Sections 14 and 15 – Female Hindu succession – Right of a widow or daughter to inherit self-acquired property or share received in partition of a coparcenary property of a Hindu male dying intestate is well recognized not only under old customary Hindu Law but also by various judicial pronouncements – If a property of a male Hindu dying intestate is a self-acquired property or obtained in partition of a coparcenary or a family property, same would devolve by inheritance and not by survivorship and a daughter of such a male Hindu would be entitled to inherit such property in preference to other collaterals. (Para 66)

इस आदेश में वर्णित माननीय उच्चतम न्यायालय के विभिन्न न्यायिक दृष्टांतों से जाहिर यह विधिक स्थिति प्रकट होती है कि हिन्दु उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 – धारा 14 व 15 – महिला हिन्दु उत्तराधिकार – एक विधवा या बेटी का स्व-अर्जित संपत्ति या बिना वसीयत के मरने वाले हिन्दु पुरुष की सहदायिक संपत्ति के विभाजन में प्राप्त हिस्से को विरासत में पाने का अधिकारी न केवल पुराने प्रथागत हिन्दु कानून के तहत बल्कि विभिन्न न्यायिक घोषणाओं के तहत अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त है:– यदि बिना वसीयत के मरने वाले हिन्दु पुरुष की संपत्ति स्व-अर्जित संपत्ति है या सहदायिक या पारिवारिक संपत्ति के रूप में प्राप्त हुई है, तो यह उत्तराधिकार के

तहत प्राप्त होगी न कि उत्तरजीविता द्वारा और ऐसे हिन्दु पुरुष की बेटी अन्य संपार्श्विक के मुकाबले ऐसी संपत्ति को विरासत में प्राप्त करने की हकदार होगी। इसके अतिरिक्त यह सिद्धान्त भी प्रतिपादित किया गया है कि जहां हिन्दु उत्तराधिकार अधिनियम के तहत प्राकृतिक वारिसान, जिसमें उक्तानुसार प्रथम श्रेणी के वारिसान को वरियता प्रदान की जानी है, के नाम नामन्तरकरण स्वीकृत किया जाना चाहिए। हस्तगत प्रकरण में श्री नाथु पिता देवा गाडरी के प्रथम श्रेणी की विधिक वारिसानों के नाम नामान्तरकरण स्वीकृत किया जाना अपेक्षित था।

अतः उपरोक्त समग्र विवेचनानुसार अपील अपलांट स्वीकार की जाकर अधीनस्थ न्यायालय सहायक कलक्टर (उपखण्ड अधिकारी), नाथद्वारा, जिला राजसमंद का निर्णय दिनांक 02.01.2024 अपास्त किया जाकर ग्राम पंचायत नेगडिया के नामांतरकरण संख्या 523 निर्णय दिनांक 31.07.1990 खाता संख्या पुरानी 132 नई 767 में वर्णित आराजीयात को मृतक नाथु पिता देवा के बजाय उनके प्रथम श्रेणी के वारीसान श्रीमती केसी बाई 1/3 हिस्से, श्रीमती लीलादेवी (श्रीमती पकिया) 1/3 हिस्से एवं श्रीमती कस्तुरी के बजाय उनके वारीसान श्री योगेश, श्रीमती कैलाश, श्रीमती सीमा एवं श्रीमती लीला को संयुक्त रूप से 1/3 हिस्से का नामांतरकरण दर्ज करने तथा उक्त खाता संख्या पुरानी 132 नई 767 में वर्णित आराजी संख्या 1284 के संपूर्ण रकबे का बैचान लालु पिता नाथु जिसमें श्रीमती लीला (श्रीमती पकिया) ने भी सहमति स्वरूप अपने हस्ताक्षर अंकित किये गये हैं, द्वारा श्री लक्ष्मीलाल पिता भेरा डांगी, निवासी चारभुजा चौक, खेमपुरा, तहसील गिर्वा, जिला उदयपुर को जरिये विक्रय पत्र दिनांक 07.02.2014 से किया जाने के कारण खोले गये नामांतरकरण संख्या 1233 दिनांक 20.02.2014 को निरस्त करते हुए आराजी संख्या 1284 में श्रीमती लीला (श्रीमती पकिया) पिता लालु के बजाय श्री लक्ष्मीलाल पिता भेरा डांगी, निवासी चारभुजा चौक, खेमपुरा, तहसील गिर्वा, जिला उदयपुर 1/3 हिस्से, श्रीमती केसी बाई 1/3 हिस्से एवं

श्रीमती कस्तुरी के बजाय उनके वारीसान श्री योगेश, श्रीमती कैलाश, श्रीमती सीमा एवं श्रीमती लीला को संयुक्त रूप से 1/3 हिस्से तथा इसी प्रकार खाता संख्या 132 पुरानी एवं खाता संख्या 767 नई में आराजी संख्या 1190 में से श्रीमती केसीबाई द्वारा अपना हिस्सा बैचान श्री भगवतसिंह पुत्र प्रेमसिंह राजपुत एवं श्री महेन्द्रसिंह पिता भानसिंह राजपुत को करने से इनके नाम संयुक्त रूप से 1/3 हिस्सा, श्रीमती कस्तुरी के बजाय उनके वारीसान श्री योगेश, श्रीमती कैलाश, श्रीमती सीमा एवं श्रीमती लीला को संयुक्त रूप से 1/3 हिस्सा एवं श्रीमती लीलादेवी (श्रीमती पकिया) 1/3 हिस्से का नामांतरकरण दर्ज किये जाने हेतु आदेश दिये जाते हैं। पत्रावली फ़ैसल शुमार होकर नम्बर से कम हो।

निर्णय सुनाया गया।

(सी. आर. देवासी)
अति. संभागीय आयुक्त,
उदयपुर